#१. विकसित चेतना की आवश्यकता -१

दिनांक ०१/०१/२०११ अमरकंटक

आज सन २०११ का पहला दिन है | इस शरीर का आयु ९१ वर्ष हो गया है | आज शनिवार प्रातः काल ५ बजे के समय में सर्वशुभ के अर्थ में सोचता रहा | सर्वशुभ का आशय सर्वदेश,सर्वकाल, सर्वमानव से है | इस क्रम में मैं अपने अनुसंधान से अर्थात साधना,समाधि,संयम से सर्वमानव शुभ को जो समझा हूँ, उसी के आधार पर सोचता रहा | सर्वशुभ का प्रस्ताव केवल विकसित चेतना के अर्थमें सार्थक होता है यह निश्चित हुआ | विकसित चेतना के अनुसार मानवत्व का स्वरुप मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में होता है; जिसमें जीने के क्रम में सहज रूप में ही व्यवहार प्रमाण, विचार प्रमाण, अनुभव प्रमाण- ये तीनों प्रमाण व्यवहार में अर्थात जीने में प्रमाणित हो जाते हैं | व्यवहार प्रमाण का तात्पर्य स्वधन-स्वनारी/स्वपुरुष और जीने देना जीने से है |

व्यवहार सहज संबंधों का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, न्याय आचरण में ही प्रमाणित होता है | अनुभव प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में प्रमाणित होता है | विचार प्रमाण नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में प्रमाणित होता है | जिसमें से नियम, नियंत्रण, संतुलन मानवेतर प्रकृति जैसा जीव संसार, अन्न वनस्पति संसार, पदार्थ संसार के साथ प्रमाणित होता है | इनके साथ प्रमाणित होने का मतलब है उक्त तीन अवस्थाएं संतुलित रहना | संतुलन का मतलब अपने अपने अवस्था में त्व सहित व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में देखा गया है | जहाँ तक न्याय, धर्म, सत्य है यह केवल मानव परम्परा में प्रमाणित हो पाता है | यह अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के रूप में ही परिलक्षित होता है |

अभी तक मानव जीव चेतना में जीते हुए जीवों से अच्छा जीने के लिए जिया है | इसे भली प्रकार से जाँचा है | इसी आधार पर सर्व मानव में शुभेच्छा होना समझ में आया | सर्व मानव या सर्वाधिक मानव अपने में समझदार होना चाहता है या अपने को समझदार माना है, जबकि जीव चेतना में जीते हैं | यही समुदायवाद का आधार हुआ | यही भ्रमवश सर्वाधिक मानव सुविधा संग्रह चाहता ही है | सुविधा संग्रह के लिए संघर्ष,युद्ध की बात तय हुई | आज की स्थिति में सभी देशवासी युद्ध के पक्ष में सोचते हैं | संघर्ष एवं युद्ध को वैध मानते हैं | इसके मूल में सभी अवैध बातों को वैध माना जाता है | इसी क्रम में धरती असंतुलित होने की जगह में आ चुकी है | धरती का संतुलन न रहने पर मानव कहाँ रहेगा? ऐसी स्थिति के लिए जिम्मेदार मानव के अलावा कौन है? इसके उत्तर में यही निकलता है कि मानव ही जिम्मेदार है |

विकसित चेतना में जीने के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के आधार पर प्रस्तुत है | इसमें पारंगत होने पर सर्वाधिक मानव न्याय, धर्म, सत्य सहज विधिपूर्वक जीना होता है | समझदारी मूलक विचार का फलन समाधान है | श्रम से समृद्धि होती है | इन दोनों के योगफल में नर नारी में समानता होती है | गरीबी अमीरी में संतुलन होना समाया रहता है | ऐसा होने के पहले मानव का मानवत्व सम्पन्न होना यही मुख्य बात है | इसकी आवश्यकता के बारे में ज्ञानी,विज्ञानी, अज्ञानी तीनों सहमत होते हैं | अध्ययन करने की मानसिकता भी कुछ व्यक्तियों में होती है | अपेक्षा मानव के साथ ही है जिसके फलस्वरूप समाधान, समृद्धि, अभय सहित अखण्ड समाज का सूत्र व्याख्या स्पष्ट होता है

| अखण्ड समाज का मूल सूत्र “मानव जाति एक है” से ही होता है | जो मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद में प्रतिपादित है | ऐसे अखण्ड समाज में नित्य उत्सव स्वाभाविक है |

मानव अपने सफलता को उत्सव के रूप में व्यक्त करता है जिसमें नामकरण उत्सव, जन्मदिन उत्सव, शिक्षा शुभारंभ उत्सव, स्नातकोत्सव, विवाहोत्सव प्रधान हैं | इस विधि से मानव समझदारीपूर्वक ही अखण्ड समाज व्यवस्था का भागीदार होना समझ में आता है | ऐसा अखण्ड समाज सार्भौम व्यवस्था मानव को समझ में आता है अथवा समझदार मानव प्रमाणित करता है | यह जीव चेतना में जीता हुआ पशु मानव, राक्षस मानव को भी स्वीकार होता है | इस प्रकार अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को वैभवित होने के लिए आज का सोच विचार सार्थक होना देखा गया है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत